P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अनुसूचित जाति की शहरी सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं में विद्यालय पूर्व शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

सुप्रिया रावत
शोध छात्रा,
प्रौढ़ सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग,
हे० न० ब० केन्द्रीय वि० वि०,
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "अनुसूचित जाति की शहरी सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं में विद्यालय पूर्व शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन" करने से सम्बन्धित है। जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति की शहरी सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं में विद्यालय पूर्व शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल के अर्न्तगत पौड़ी जनपद के श्रीनगर शहर की कुल 48 अनुसूचित जाति की सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं को यादृश्च्छिक विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सेवारत माताओं की तुलना में गैर–सेवारत मातायें शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार में अधिक सक्रिय पायी गयी।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, सेवारत माता, गैर–सेवारत माता, विद्यालय पूर्व शिशु, कार्यव्यवहार, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

किसी भी देश के सम्पूर्ण विकास के लिए उसके मानव संसाधन का विकास होना आवश्यक है। मानव संसाधन के विकास के लिए प्रत्येक नागरिक का समुचित शारीरिक और मानसिक विकास आवश्यक है। मनुष्य के इस विकास क्रम की प्रथम अवस्था मनुष्य की शैशवावस्था है। एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, परन्तु स्वस्थ शरीर पोषण युक्त सन्तुलित आहार के बिना असंभव है। अतः यह कह सकते हैं कि जीवित रहने के साथ–साथ शरीर को स्वस्थ तथा ऊर्जावान बनाये रखने के लिए पोषण के साथ पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है।

साहित्यावलोकन

यूड्किन के अनुसार –"पोषण मनुष्य एवं उसके बीच का सम्बन्ध है एवं इसमें शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा जैविकीय पहलू भी सम्मिलित होते हैं"। (डॉ० सिंह वृन्दा, आहार विज्ञान एवं पोषण,,पृष्ठ सं०–3

एक स्वस्थ शिशु का सन्तुलित शारीरिक–मानसिक विकास होने के साथ–साथ उसमें रोग प्रतिरक्षण क्षमता तभी सम्भव है जब मां अपने बच्चे के प्रति जागरूक और सक्रिय हो और बच्चे के पोषण सम्बन्धी बातों का भी विशेष ध्यान रखे और इन सभी बातों को अपने नित्य प्रति के कार्यव्यवहार में भी सम्मिलित करें। यद्यपि बच्चा माता–पिता दोनों की जिम्मेदारी है, किन्तु माता की परिवार में केन्द्रीय भूमिका होती है, जो अपने परिवार एवं बच्चों के लालन–पालन शिक्षा से लेकर पोषण तक विभिन्न कर्तव्यों का निपुणता पूर्वक निर्वहन करती है। शिशु पिता से अधिक माता के सम्पर्क और सानिध्य में रहता है अतः बच्चे के खान–पान, टीकाकरण, स्वच्छता, विश्राम एवं रोगों से बचाव एवं रोकथाम हेतु माता को अधिक संजीदा और सक्रिय होना आवश्यक है। भारत में सम्पूर्ण जनसंख्या का एक बड़ा भाग जो निम्न आय वर्ग का है वह आहार के निर्धारित दैनिक आवश्यकता के सामान्य–स्तर से भी निम्न–स्तर का आहार प्राप्त करता है। उनके आहार में एक या एक से अधिक पोषक तत्वों की कमी या अधिकता पायी जाती हैं। उचित पोषण न मिलने से वे अनेक रोगों जैसे– क्वाशियोरकर, मरास्मस, अन्धता, स्कर्वी, रिकेट्स, बेरी–बेरी एवं रक्ताल्पता आदि रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप उनकी कार्यक्षमता एवं शारीरिक वृद्धि एवं विकास घट जाता है। शिशुओं के पोषण स्तर एवं पोषण स्थिति में सुधार करने हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकार, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी अग्रसर हैं। "राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4, 2015–16" के आंकड़ों पर इंडिया स्पेड द्वारा किये

गये विश्लेषण के अनुसार 6 से 23 माह की आयु वर्ग के 10 भारतीय शिशुओं में से मात्र 1 को ही पर्याप्त आहार प्राप्त हो पाता है। परिणामतः देखा गया कि 5 वर्ष से कम आयु के 35.7 प्रतिशत बच्चों का भार सामान्य से कम है। केवल 35 प्रतिशत बच्चों को 0–6 माह तक नियमित रूप से स्तनपान करवाया जाता है। यह आंकड़े वर्ष 2005–06 (एनएफएचएस–3 से 9 प्रतिशत) अधिक है। स्तनपान से खाद्य पदार्थों में बदलाव की अवधि को पूरक आहार के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसमें 6 से 23 माह की आयु के शिशु सम्मिलित होते हैं। यह एक संवेदनशील अवधि है इस अवधि में कई शिशु कुपोषण से ग्रसित होते हैं। परिणामतः 2 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण का आंकड़ा बढ़ता है। (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–2015–2016)

2011 की जनगणना के अनुसार देश में 0–6 आयु वर्ग के शिशुओं की कुल जनसंख्या 16,44,78,150 है, जिसमें 8,57,32,470 बालक एवं 7,87,45,680 बालिकाएं हैं। उत्तराखण्ड में 0–6 आयु वर्ग के शिशुओं कि जनसंख्या 13,55,814 है, जिसमें 52.90 प्रतिशत बालक एवं 47.10 प्रतिशत बालिकाएं हैं। प्रतिशत की दृष्टि से देखा जाये तो उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या में से शिशुओं का अनुपात 13.44 है। 2001 में यह 16.02 प्रतिशत था। (उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन परीक्षा वाणी पृष्ठ सं–261)

वर्तमान समय में भारतीय महिलायें घर की चाहरदीवारी से बाहर निकलकर देश की बहुआयामि विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। साथ ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। विश्व के विकसित, विकासशील एवं अविकसित देशों में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति एवं जागरूकता स्तर में भिन्नता उनके सामाजिक–आर्थिक जीवनशैली,शैक्षिक स्तर, पारिवारिक स्तर, शक्ति संरचना में उनकी स्थिति तथा भूमिका पायी जाती है महिलायें चाहे वर्ण जाति व्यवस्था के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो परन्तु भारतिय समाज प्राचीन काल से ही मानव को विभिन्न वर्गों में विभाजित करता है। भारतीय समाज की सबसे निम्न स्तर पर दृष्टित होने वाली महिलायें अनुसूचित जाति से सम्बन्धित होती हैं। आधुनिक समय में अनुसूचित जाति की महिलाओं की प्रस्थिति में परिर्वतन हुआ है। अनुसूचित जाति की महिलायें अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु दूसरे वर्ग के व्यक्तियों पर निर्भर नहीं हैं। अनुसूचित जाति की महिलाओं द्वारा सेवारत होने के फलस्वरूप उनके पारिवारिक जीवन स्तर में एक स्पष्ट परिर्वतन हुआ है, साथ ही अनुसूचित जाति की महिलाओं के शैक्षिक स्तर में भी वृद्वि हुई है। परिणामतः वे अपने बच्चे के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार के प्रति भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। सेवारत होने के साथ–साथ वे शिशु की पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं का पूर्णतः ध्यान रखती है।

जनगणना 2011 के आँकड़ों के अनुसार भारत में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की संख्या 12,10,570 है। जिसमें से अनुसूचित जाति की महिलाओं का प्रतिशत 16. 6 हैं। उत्तराखण्ड में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की संख्या 18,92,516 है। जिसमें से अनुसूचित जाति की महिलाओं की संख्या 47.87 प्रतिशत है। पौड़ी क्षेत्र में कुल जनसंख्या में अनुसूचित महिलाओं की संख्या 17.80 प्रतिशत है। (उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन परीक्षा वाणी पृष्ठ सं–269–270)। आधुनिक वैश्वीकरण युग में महिला सशक्तिकरण ने महिलाओं को कार्यक्षेत्र में समान अधिकार प्रदान किये हैं। नियोजित विकास की लगभग आधी सदी में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की कार्योजन के प्रति सक्रियता बढ़ी है। स्वतन्त्रता के बाद की बदलती हुई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के कारण महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में वृद्वि हुई है एवं इन नए हालातों के फलस्वरूप इनके लिए समानता की अभिव्यक्ति एवं उनकी प्रतिष्ठा के नये मार्ग खुल गये हैं। महिलायें सेवारत होने के साथ–साथ अपने परिवार एवं शिशु के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार कर रही हैं।

अध्ययन का औचित्य

अनुसूचित जाति वर्ग प्राचीन समय से ही शोषित वर्ग रहा है। जिसको मुख्य धारा से जोड़ने हेतु सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं ने प्रारम्भ से ही प्रयास किये हैं। शोषित वर्ग होने के कारण अनुसूचित जाति की महिलायें सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई हैं परन्तु माता चाहे किसी भी जाति वर्ग से हो वह अपने शिशु का पालन–पोषण उचित प्रकार से करने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती है। वर्तमान समय में अनुसूचित जाति की माताओं की स्थिति में परिर्वतन आया है किन्तु अनेक सामाजिक–आर्थिक कारकों के कारण यह परिर्वतन पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। जिसके फलस्वरूप बाल पोषण के प्रति समुचित जागरूकता और कार्यव्यवहार की वांछित सक्रियता में कमी देखी गई है जिस कारण शिशु कुपोषण से ग्रसित हो जाते हैं। अतः इस अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया है कि अनुसूचित जाति की शहरी सेवारत एवं गैर–सेवारत मातायें अपने शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार के प्रति कितनी सजग एवं क्रियाशील हैं। अनुसूचित जाति की सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति उनके कार्यव्यवहार को किस स्तर तक प्रभावित करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

अनुसूचित जाति की सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं में शिशुओ के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सोद्देश्य यादृश्च्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड़ के पौड़ी जनपद में श्रीनगर के शहरी क्षेत्र के 19–35 आयुवर्ग के कुल 48 उत्तरदाताओं को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में 1–3 वर्ष के बच्चों की अनुसूचित जाति की सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं को सम्मिलित किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वविकसित की गई प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अध्ययन हेतु संकलित आंकड़ों को श्रेणीबद्व एवं व्यवस्थित करके सारणीयन के पश्चात उनका विश्लेषण किया। जिसमें साधारण प्रतिशत के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये। आंकड़ों का विश्लेषण इस प्रकार है–

उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

शिक्षा के आधार पर माताओं की संख्या

शिक्षा	गैर–सेवारत	सेवारत	योग
निरक्षर	3	2	5
प्राथमिक / उच्चप्राथमिक	4	5	9
हाईस्कूल	9	9	18
उच्चशिक्षित	8	8	16
योग	24	24	48

आयु के आधार पर माताओं की संख्या

आयु	गैर–सेवारत	सेवारत	योग
19–25	7	7	14
26–32	9	7	16
32 से अधिक	8	10	18
योग	24	24	48

मासिक आय के आधार पर माताओं की संख्या

आय	गैर–सेवारत	सेवारत	योग
5000–15000	15	12	27
16000–25000	4	4	8
26000–35000	4	5	9
36000 से अधिक	1	3	4
योग	24	24	48

आंकड़ों का विश्लेषण

उत्तरदाताओं से विभिन्न कथनों के माध्यम से शिशुओं के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार की जानकारी प्राप्त की गई। संकलित तथ्यों का विश्लेषण निम्नवत प्रस्तुत है:–

सारणी–1

कथन 1– क्या आपने जन्म के तुरन्त बाद नवजात शिशु को अपना पहला स्तनपान करवाया ?

क्र० सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	16	(66.7)	8	(33.3)	24	(100)
2	सेवारत	13	(54.2)	11	(45.8)	24	(100)
3	योग	29	(60.41)	19	(39.58)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जन्म के तुरन्त बाद नवजात शिशु को अपना पहला स्तनपान करवाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 66.7 प्रतिशत सक्रिय थीं जबकि सेवारत मातायें अपेक्षाकृत कम 54.2 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी।

सारणी–2

कथन–2 क्या आपने शिशु को निश्चित आयु (6 माह) पश्चात पूरक आहार देना प्रारम्भ किया था

क्र० सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	17	(70.3)	7	(29.2)	24	(100)
2	सेवारत	11	(45.8)	13	(54.2)	24	(100)
3	योग	28	(58.33)	20	(41.66)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु को निश्चित आयु (6 माह) पश्चात पूरक आहार देने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 70.3 प्रतिशत अत्यधिक सक्रिय पायी गयी, जबकि सेवारत मातायें अपेक्षाकृत कम 45.8 प्रतिशत ही सक्रिय थीं।

सारणी–3

कथन–3 क्या आप शिशु का पूरक आहार स्वयं तैयार करती हैं?

क्र०सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	15	(62.5)	9	(37.5)	24	(100)
2	सेवारत	12	(50)	12	(50)	24	(100)
3	योग	27	(56.25)	21	(43.75)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु का पूरक आहार स्वयं तैयार करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 62.5 प्रतिशत सक्रिय थीं, जबकि सेवारत माताये अपेक्षाकृत कम 50 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी।

सारणी–4

कथन–4 क्या आप शिशु को पानी समुचित प्रक्रिया से उबाल कर पिलाती हैं?

क्र०सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
	गैर–सेवारत	15	(62.5)	9	(37.5)	24	(100)
2	सेवारत	12	(50)	12	(50)	24	(100)
3	योग	27	(56.25)	21	(43.75)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु को पानी समुचित प्रक्रिया से उबाल कर पिलाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 62.5 प्रतिशत सक्रिय थीं, जबकि सेवारत मातायें अपेक्षाकृत कम 41.6 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

सारणी–5

कथन–5 क्या आप शिशु के सन्तुलित आहार का ध्यान रखती हैं?

क्र०सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या					
		हाँ (प्रतिशत)		नहीं (प्रतिशत)		योग	
1	गैर–सेवारत	16	(66.7)	8	(33.3)	24	(100)
2	सेवारत	14	(58.3)	10	(41.6)	24	(100)
3	योग	30	(62.5)	18	(37.5)	48	(100)

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु के सन्तुलित आहार का ध्यान रखने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 66.7 प्रतिशत सक्रिय जबकि सेवारत मातायें अपेक्षाकृत कम 58.3 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी।

सारणी–6

कथन–6 क्या आप शिशु को विटामिन "ए" की खुराक पिलायी?

क्र० सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	18	(75)	6	(25)	24	(100)
2	सेवारत	15	(62.5)	9	(37.5)	24	(100)
3	योग	33	(68.75)	15	(31.25)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु को विटामिन "ए" की खुराक पिलाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 75 प्रतिशत अधिक सक्रिय थीं, जबकि सेवारत मातायें 62.5 प्रतिशत कम सक्रिय थीं।

सारणी–7

कथन–7 क्या आप शिशु की दूध की बोतल को पानी में उबाल कर साफ करती हैं?

क्र० सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	17	(70.8)	7	(29.2)	24	(100)
2	सेवारत	14	(58.3)	10	(41.7)	24	(100)
3	योग	31	(64.58)	17	(35.41)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु की दूध की बोतल को पानी में उबाल कर साफ करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 70.8 प्रतिशत सक्रिय थीं, जबकि सेवारत माताये अपेक्षाकृत कम 58.3 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी।

सारणी–8

कथन–8 क्या आप शिशु के भोजन में लौह लवण युक्त भोज्य पदार्थ का प्रयोग करती हैं?

क्र० सं०	उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या				योग	
		हाँ		नहीं			
		सं०	प्रति	सं०	प्रति		
1	गैर–सेवारत	17	(70.8)	7	(33.3)	24	(100)
2	सेवारत	13	(54.2)	11	(45.8)	24	(100)
3	योग	30	(62.5)	18	(37.5)	48	(100)

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिशु के भोजन में लौह लवण युक्त भोज्य पदार्थ का प्रयोग करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें 70.8 प्रतिशत सक्रिय पायी गयी, जबकि सेवारत मातायें अपेक्षाकृत कम 54.2 प्रतिशत सक्रिय थीं।

निष्कर्ष

1. शिशु जन्म के बाद स्तनपान करवाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार के प्रति गैर–सेवारत मातायें (66.7 प्रतिशत) सेवारत माताओं (52.2 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
2. शिशु को निश्चित आयु पश्चात पूरक आहार देने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें (70.3 प्रतिशत) सेवारत माताओं (45.8 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
3. शिशु का समुचित पूरक आहार स्वंय तैयार करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें (62.5 प्रतिशत) सेवारत माताओं (50 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
4. पानी समुचित प्रक्रिया से स्वच्छ कर पिलाने में गैर–सेवारत मातायें (62.5 प्रतिशत) सेवारत माताओं (50 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
5. शिशु के सन्तुलित आहार का ध्यान रखने के सम्बन्ध में गैर–सेवारत मातायें (66.7 प्रतिशत) सेवारत माताओं (41.6) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
6. विटामिन "ए" की खुराक पिलाने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत माताओं (75 प्रतिशत) का कार्यव्यवहार सेवारत माताओं (62.5 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहता है।
7. शिशु की दूध की बोतल को पानी में उबाल कर साफ करने सम्बन्ध में गैर–सेवारत मातायें (70.8 प्रतिशत) सेवारत माताओं (58.3 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।
8. शिशु के भोजन में लौह लवण युक्त भोज्य पदार्थ का प्रयोग करने सम्बन्धी कार्यव्यवहार में गैर–सेवारत मातायें (70.8 प्रतिशत)सेवारत माताओं (54.2 प्रतिशत) की तुलना में अधिक सक्रिय रहती हैं।

कारण

1. अनुसूचित जाति की दोनों श्रेणीयों की माताओं के सक्रिय कार्यव्यवहार का मुख्य कारण शिक्षा एवं जागरूकता में निरन्तर वृद्धि है। आरक्षण एवं क्रय सुविधाओं और नये अवसरों के परिणाम स्वरूप दोनों श्रेणी की माताओं के सामाजिक, आर्थिक स्तर में

सुधार हुआ है, साथ ही शहरों में जनसंचार माध्यमों और स्वास्थ्य–पोषण सम्बन्धी सुविधाओं में आशानुकूलन सुधार प्रक्रिया जारी है, इन सभी कारणों से शिशु के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार में वृद्वि वांछित है।

2. सेवारत मातायें सेवा में होने के कारण अपने शिशु के पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार को ठीक प्रकार से नहीं कर पाती एवं कार्यस्थल और घर के मध्य दूरी के कारण वह अपने शिशु के पोषण पर ध्यान नहीं दे पाती हैं उन्हें शिशु पोषण एवं देखभाल सम्बन्धी कार्यव्यवहार हेतु दूसरे व्यक्तियों पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। अतः सेवारत माताओं का शिशु पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार कम सक्रिय हैं।
3. गैर–सेवारत मातायें घर पर रह कर अपने शिशु का उचित प्रकार से पालन पोषण कर पाती हैं जिस कारण वे शिशु पोषण सम्बन्धी कार्य में अधिक सक्रिय हैं।
4. अनुसूचित जाति की सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं के कार्यव्यवहार के मध्य अन्तर तो है किन्तु यह अन्तर कम है जो अनुसूचित जाति की माताओं में शिक्षा जागरूकता और सामाजिक–आर्थिक स्तर के उन्नयन को दर्शाता है।

सुझाव

1. शिशु के पोषण कार्यव्यवहार से सम्बन्धित परामर्श एवं प्रशिक्षण शिविरों एवं संगोष्ठीयों का आयोजन किया जाये जिसके माध्यम से सेवारत माताओं एवं गैर–सेवारत माताओं को शिशु के पोषण कार्यव्यवहार को समुचित रूप से करने हेतु जागरूक एवं कुशल बनाया जायें।
2. सेवारत एवं गैर–सेवारत माताओं के पारिवारिक सदस्यों को शिशु पोषण सम्बन्धी कार्यव्यवहार के प्रति जागरूक किया जाये।
3. सेवारत गर्भवती एवं धात्री माताओं को सरकारी एवं गैर–सरकारी कार्यालयों में शिशु के पोषण से सम्बन्धित सुविधायें एवं प्रवधान दिये जायें।
4. अनुसूचित जाति की सेवारत माताओं की बस्तियों में गुणवत्तापूर्ण शिशु देखभाल केन्द्र खोले जायें साथ ही उन केन्द्रों में पोषण सम्बन्धी समस्त सुविधायें उपलब्ध करवायी जायें।
5. सेवारत माताओं के शिशुओं की देखभाल हेतु घर में सुयोग्य प्रशिक्षित आया एवं केयर टेकर्स की व्यवस्था उपलब्ध हो एवं उन्हें अच्छी आर्थिक सुविधा प्रदान की जाये।
6. शिशु देखभाल केन्द्रों एवं संस्थाओं को महत्व दिया जाये।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अग्रवाल जी के, भारतीय समाजः मुद्दे एवं समस्याएँ, एस बीपीडी पब्लिशिंग हाउस आगरा,वर्ष–2011–12, पृष्ठ संख्या 94।*
2. *डॉ० सिंह वृन्दा, आहार विज्ञान एवं पोषण, पंचशील प्रकाशन जयपुर, संस्करण–नवम् 2012, पृष्ठ सं०–3*
3. *केशरी नन्दन, उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन परीक्षा वाणी, बौद्विक प्रकाशन इलाहबाद, अष्टम संस्करण–2016 –17 पृष्ठ सं–269–270।*
4. *डॉ जी. पी. शैरी, मातृ–कला एवं शिशु कल्याण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, नवीनतम संस्करण – 1991,पृष्ठ सं–84।*
5. *डॉ शशिरानी अग्रवाल, स्त्रीः वर्तमान संदर्भ में, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, वर्ष–2005–06,पृष्ठ सं०–116।*
6. *डॉ वृन्दा सिंह, बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण–द्वितीय, वर्ष–2013, पृष्ठ सं०–21*
7. *www.indiaspendhindi.com*
8. *http//www.censusindia.gov.ins*